मिथिला पेंटिंग

बिहार की ऐतिहासिक कला एवं सांस्कृतिक परम्परा आरंभ से ही अन्वेषण एवं आकर्षण का केन्द्र रहा है। मधुबनी पेंटिंग भी उनमें से एक हैं। यह चित्रकला राज्य के मिथिलाँचल क्षेत्र जैसे दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी तथा नेपाल के कुछ क्षेत्रों की प्रमुख चित्रशैली है। यह चित्रकला कितनी पुरानी है, इसका कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं है परंतु इस पेंटिंग का प्रथम साक्ष्य विद्यापति द्वारा लिखी गई पुस्तक 'कीर्तीपताका' में मिलता है। प्रारंभ में रंगोली के रूप में रहने के बाद यह धीरे-धीरे आधुनिक रूप में कपड़ों, दीवारों, कागज, बैग आदि पर उतर आई है। मिथिला की महिलाओं द्वारा शुरू की गई इस घरेलु चित्रकला को अब पुरुषों ने भी अपना लिया है।

मिथिला पेंटिंग के क्षेत्र

न जाने कितने समय से इस कला ने लोगों को आकर्षित किया है। घनी की हुई चित्रकारी तथा उसमें भरे गऐ चटख रंग इंद्रधनुष की तरह दिखते हैं। माना जाता है कि इस चित्रकला को राजा जनक ने राम-सीता के विवाह के समय महिला कलाकारों द्वारा बनवाया था। पहले तो केवल ऊँची जाति की महिलाओं (जैसे ब्राह्मण, कायस्थ) को ही इस कला को बनाने की इजाजत थी लेकिन समय के साथ-साथ ये सीमाएँ भी खत्म हो गई। अब इस विधा को मछुआरा, पासवान आदि जातियों ने भी अपना लिया है। पासवान जाति के समुदायों के द्वारा राजा 'सलहेस' के जीवन वृतान्त का चित्रण भी किया जाने लगा है। इस समुदाय के लोग राजा सलहेस को अपने देवता के रूप में पूजते हैं।

मिथिला की महिलायें पारंपरिक रूप से अपने घरों-दरवाजों पर चित्रों को उकेरती रही है। इन चित्रों में समूचा संसार रच-बस जाता है। पिछले कुछ दशकों से इस चित्रकला को कपड़े या फिर पेपर के कैनवास पर भी खूब बनाया जा रहा है। मधुबनी जिले के जितवारपुर गाँव की जगदंबा देवी, सीता देवी और रसीदपुर गाँव की गंगा देवी के साथ मिथिला पेंटिंग को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलवाने में महासुंदरी देवी की अहम् भूमिका रही है। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित महासुंदरी देवी को वर्ष 2011 में भारत सरकार ने कला के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए 'पद्मश्री' से सम्मानित किया था।

मधुबनी चित्रकला को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-

1. भित्ती चित्र और
2. अरिपन या अल्पना।

1. भित्ती चित्र

इसे मिट्टी से पुती दीवारों पर बनाया जाता है। इसे घर की तीन खास स्थानों पर ही बनाने की परंपरा है जैसे- भगवान का घर, नव-विवाहितों के कमरें एवं शादी या किसी विशेष उत्सव पर घर की बाहरी दीवारों पर। भगवान के चित्रों में जिन देवी-देवताओं को दिखाया जाता है, उनमें माँ दुर्गा काली, सीता-राम, राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती, गौरी-गणेश, तथा विष्णु के दस अवतार, नव-विवाहित जोड़ों के लिए बने कोहबर घर में प्रतीक रूप में प्रजनन के अवयवों, मिथकों और लोक कथाओं का चित्रण, जीवन दर्शन को ही निरूपित किया जाता है। कोहबर घर के भीतर और बाहर बने चित्र कामुक प्रवृत्ति के होते हैं। कोहबर के बाहर रति एवं कामदेव के चित्र एवं इसके भीतर पुरुष-नारी के जननांगों की आकृति तथा चारों कोणों पर यक्षिणी के चित्र बनाये जाते हैं। पशु-पक्षियों की चित्रकारी प्रतीक रुप में होती है जिसमें सुग्गे काम वाहक प्रतीक के रुप में, मछली कामोत्तेजक प्रतीक के रुप में, सिंह शक्ति के प्रतीक के रुप में, हाथी-घोड़े ऐश्वर्य के प्रतीक के रुप में, हंस-मयूर शांति के प्रतीक के रुप में चित्रित/प्रयोग किए जाते हैं। कुछ पौधो की आकृतियाँ भी कोहबर घर में देखी जा सकती है। यथा केला एवं बांस के चित्र। केला मांसलता तथा बाँस, वंशवृद्धि के प्रतीक के रुप में कोहबर की

कोहबर चित्र

भीतरी दीवारों पर चित्रित किए जाते हैं। नवविवाहित जोड़ों को सर्वप्रथम कोहबर घर में बने सूर्य एवं चन्द्र की आकृतियों के दर्शन कराए जाते है जो दीर्घ जीवन के प्रतीक के रुप में बनाए जाते हैं। उत्सव विशेष अवसर पर कई प्राकृतिक और रम्य नजारों की पेंटिंग बनाई जाती है। जैसे पशु-पक्षी, सूर्य व चन्द्रमा, धार्मिक पेड़-पौधे (यथा तुलसी), फूल-पत्ती आदि को स्वास्तिक के चिह्न के साथ सजाया-सँवारा जाता है।

2. अरिपन

मिथिला में जितने भी त्योहार या उत्सव होते हैं, उन सब में आँगन और दीवारों पर चित्रकारी करने की बहुत पुरानी परम्परा है। आँगन में जो चित्रकारी की जाती है उसे अरिपन तथा दीवारों पर की गई चित्रकारी को *पट्टचित्र* कहा जाता है। प्रारम्भ में इसे इसलिए बनाया जाता था ताकि खेतों में फसल की पैदावार अच्छी हो लेकिन अब इसे शुभ कामों में भी बनाया जाता है। बंगाल में अल्पना एवं मिथिला में अरिपन के रुप में यह परम्परा महिलाओं द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी संस्कृति के रुप में बढ़ती रही है। यह आँगन या चौखट के सामने जमीन पर बनाये जाने वाले आकर्षक चित्र होते है। चित्र बनाने के लिए माचिस की तीली व बाँस की कूची को बहुत देर तक पानी में भिगोने के बाद सिलवट (सिलउटी-लोढ़ी) पर अच्छी तरह पीस लिया जाता है। उसमें थोड़ा पानी मिलाकर एक गाढ़ा घोल तैयार किया जाता है जिसे 'पिठार' कहा जाता है। इसी पिठार से गाय के गोबर या चिकनी मिट्टी से लीपी गई भूमि पर महिलाएँ अपनी

अरिपन चित्र

ऊँगलियों से चित्र या अरिपन बनाती है। विशेष बात यह है कि अलग-अलग उत्सवों पर भिन्न-भिन्न अरिपन बनाया जाता है। जैसे:- अविवाहित लड़कियों के लिए तुलसी पूजा के अवसर पर बनाए गये अरिपनों में ज्यामितीय आकारों, विशेषकर त्रिकोणात्मक और आयताकार आकारों का अधिक प्रयोग होता है। विवाह और उत्सवों के अवसर पर पत्तियों के आकार का सर्वाधिक उपयोग होता है। इस प्रकार यह अन्य लोकथाओं की भांति विभिन्न पर्व-त्योहारों, अनुष्ठानों, विवाह, यज्ञोपवीत एवं शुभ धार्मिक अवसरों से अभिन्न रुप से जुड़े रहते हैं।

मधुबनी चित्रकला के चित्रों में चटख रंगों का प्रयोग खूब किया जाता है और ये रंग भी प्राकृतिक स्त्रोतों से ही बनाए जाते हैं, जैसे- हरा रंग हरी पत्तियों से, पीला रंग सरसों एवं हल्दी से, सिंदूरी रंग सिंदूर से लाल रंग पीपल की छाल से, सफेद रंग दूध एवं चावल से। इसके अतिरिक्त चित्रों में गुलाबी एवं नींबू रंगों का भी प्रयोग किया जाता है। रंग की पकड़ को मजबूत बनाने के लिए रंगों में बबूल के वृक्ष की गोंद को मिलाया जाता है। किन्तु वर्तमान समय में रासायनिक रंगों का भी प्रयोग किया जा रहा है। मधुबनी चित्रकला में चित्रण में रंगों का समायोजन विशेष उल्लेखनीय है। पीला रंग धरती, उजला रंग पानी, लाल रंग आग, काला रंग वायु एवं नीला रंग आकाश के लिए प्रयोग किया जाता है।

मिथिला पेंटिंग की खोज एवं प्रसार

आश्चर्य की बात है कि मिथिला पेंटिंग को लेकर स्थानीय लोग और राज्य शुरू से उदासीन रहे हैं। सिर्फ परंपरा के नाम पर वे इसका निर्वहन पीढ़ी दर पीढ़ी करते आ रहे हैं। 1934 ई० में बिहार में भारी भूकंप आया था जिसमें जन-धन की अधिक क्षति हुई थी। भूकंप पीड़ितों को सहायता पहुँचाने के क्रम में तत्कालीन ब्रिटिश अफसर और कलाप्रेमी डब्लू *जी आर्चर* (I.C.S. अधिकारी) की दृष्टि क्षतिग्रस्त मकानों की भीतो (दीवारों) पर बनी रेल, कोहबर आदि चित्रों पर पड़ी। मंत्रमुग्ध हो उन्होंने इसे अपने कैमरे में कैद कर लिया। बाद में वे इस कला के संग्रह और अध्ययन में जुट गए। 1949 ई० में मार्ग (MARG) जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका में उन्होंने 'मैथिली पेंटिंग' नाम से एक लेख इस कला में प्रयुक्त बिंबों और प्रतीकों का विवेचन करते हुए लिखा ''ब्राह्मणों की पेंटिंग में प्रयुक्त रंग मिरो (इनका पूरा नाम 'जोआन मीरो ई. फेरा' है। ये स्पेन प्रसिद्ध चित्रकार एवं मूर्तिकार थे।) की पेंटिंग के समानान्तर है जबकि कायस्थों की पेंटिंग काले टेराकोटा रंगों के ग्रीक गुलदानों से मिलते जुलते हैं। ब्राह्मणों की पेंटिंग में पतली, अस्थिर और कमजोर रेखाएँ होती हैं जबकि कायस्थों की पेंटिंग की रेखाएँ सधी हुई, मजबूत और स्पष्ट होती है।'' चित्रों के आध्यात्मिक अर्थ और विभिन्न शैली की पड़ताल साठ के दशक में All India Handicraft Board की तत्कालीक निदेशक पुपुल जयकर की देखरेख में भास्कर कुलकर्णी द्वारा किया गया। इसके पश्चात् देश-विदेश के कलाप्रेमियों में इस चित्रशैली की ख्याति पहुँची। धीरे-धीरे इस कला की प्रदर्शनी फ्राँस, जर्मनी, अमेरिका और जापान में बढ़ती चली गई। फ्राँस के वैक्स वैकुआद, जर्मनी की एरेकास्मिथ मोसर अमेरिका के रेमंड ओएंस, जापान के हासेगावा और भारत के उपेन्द्र महर्षि एवं ज्योतिन्द जैन ने इस चित्रशैली को व्यवस्थित रूप से सहेजा और इसका प्रचार-प्रसार किया। सन् 1988 में तोक्यो हासेगाबा द्वारा जापान के तोकामाची हिल्स के निगाता इलाके में 'मिथिला लोकचित्र कला संग्रहालय' की स्थापना की गयी।

आज मधुबनी कला शैली में अनेकों उत्पाद बनाए जा रहे हैं जिनका राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजार फैलता ही जा रहा है। दु:ख की बात यह है कि मधुबनी पेंटिंग बनाने वाले कलाकारों को उनका समुचित मेहनताना नहीं मिल पाता है क्योंकि पहला इन उत्पादों को बेचने के लिए एक माध्यम की आवश्यकता होती है। माध्यम के रूप में बिचौलिया काम करता है और उनके हक का पैसा खा जाता है। दूसरा, चित्रकला को खरीदने वालों का एक सीमित वर्ग होता है। यह सच है कि मिथिला पेंटिंग ने अपने रंगों के साथ चार दशकों में विदेशों में गहरी छाप छोड़ी है, लेकिन अपने देश में अब भी उसे सही ठिकाना नहीं मिला है। एक तरफ बाजार में भारतीय कला को मुँह-माँगी कीमतों पर खरीदा-बेचा जाता है वहीं मिथिला शैली पर पहचान का संकट है। उसे एक बार फिर से 'लोक कला' के खाँचे में फिट करके उसकी परवाज़ रोकने की साजिश की जा रही है। गैर सरकारी संस्थान और सरकार दोनों इसके लिए जिम्मेदार है। कलाकारों के पास न कोई संगठनशक्ति है न दबाव बनाने के कोई और तरीके। उनकी चिन्ता तो बस इतनी है कि किसी तरह गुजारा हो जाए। विगत

कुछ वर्षों में सरकारी प्रयासों तथा जनरुचि के कारण इस चित्रण शैली की लोकप्रियता में वृद्धि हुई है। इस शैली की मुख्य प्रतिनिधियों में पद्मश्री सिया देवी, कौशल्या देवी, जगदम्बा देवी, सीता देवी, भगवती देवी, मैना देवी आदि का नाम चोटि के कलाकारों के रुप में लिया जाता है।

Written By-

Smt. Annapurna Tanti

Famous Mithila Painting Artist

(Bhagalpur, Bihar)